© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 06 , Issue : 01 | January – March 2019

प्रेमचंद का कथा साहित्यः भारतीय किसान की स्थिति

Ranu Sharma
Research Scholar, Dept. of Hindi
JS University Shikhoabad, Firozabad UP

सार

प्रेमचंद ने भारतीय किसान के समग्र यथार्थ का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। उन्होंने सिर्फ किसानों के आर्थिक शोषण का ही वर्णन नहीं किया बल्कि अपने साहित्य में उन्होंने भारतीय किसान की एक बोधगम्य पहचान कायम करने का प्रयास किया। प्रेमचंद ने उपन्यासों में किसान जमींदार, महाजन, नौकरशाही से संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है। किन्तु किसान अपनी मरजाद की रक्षा आजीवन कष्ट सहकर भी करता है। इस श्रमजीवी वर्ग को चूसने के लिए शासन, जमींदारों, पूँजीपति, महाजन, पुरोहित धर्म सभी के मिले जुले षड्यंत्र हैं। किन्तु वह विकट परिस्थितियों का भी डटकर सामना करता है। प्रेमचंद ने भारतीय किसान की समग्र समस्याओं को अपने उपन्यासों में उतारा है। बीसवीं सदी के दूसरे तीसरे दशक में देश की औपनिवेशिक व्यवस्था में किसानों की जो दशा थी, आज़ादी के उनहत्तर साल बाद क्या हालत है, यह हमें रोज अखबार और टीवी से पता चल रहा है। मीडिया पर आज के दौर में पूँजीपति या औद्योगिक घरानों के भारी नियंत्रण के बाद भी पिछले पंद्रह सालों में देश के तीन लाख से भी अधिक किसान आत्महत्या कर चुके हैं और आज भी उन्हे कोई राहत नहीं है, भले ही कोई हज़ार करोड़ मुआवजे बाँटे गए हैं। किसानों की आत्महत्या या देश का कृषि संकट देश की भ्रष्ट व्यवस्था के कारण आज भी कम होने की बजाय निरंतर बढ़ रहा है।

मुख्य शब्दः भारतीय, किसान, उपन्यास, राजनैतिक, आज़ादी इत्यादि।

प्रस्तावना

प्रेमचंद के इस ओर झुकाव होने का एक राजनैतिक परिप्रेक्ष्य भी है। कांग्रेस के विभाजन(1907ई.) के बाद उसका प्रभाव और कार्यक्षेत्र धीरे-धीरे घटा। जब प्रथम विश्वयुद्ध 1914 ई. में हुआ, जिसमें भारतीय फौजें भी गयी, किसान कांग्रेस के करीब आए। 1915 ई. में कांग्रेस ने चम्पारन जिले में किसानों की कठिनाईओं की जाँच के लिए कमीशन बैठाने का प्रस्ताव किया। गांधी जी ने 1917 ई. में चम्पारन जमींदारों के खिलाफ किसानों के आंदोलन को संगठित किया, उनका उद्देश्य किसानों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना था। इसी कारण 1918 और 1919 को कांग्रेस में बहुत सारे किसान सम्मिलित हुए।

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 06 , Issue : 01 | January – March 2019

1919 ई. में कांग्रेस अधिवेशन में किसान सभा ने एक क्रांतिकारी प्रस्ताव पास किया और सरकार से कहा गया कि सारे भारत में किसान ही जमीन का असली मालिक है। "राजनैतिक प्रगति के समानान्तर साहित्यिक प्रगति की दिशा भी जनतांत्रिक होती जा रही थी।'' 1917 ई. में जब रूसी क्रांति हुई तो समस्त साहित्यकारों और बुद्धिजीवियों के सामने नयी दुनिया का स्वरूप स्पष्ट होने लगा। इसके साथ ही प्रेमचंद के साहित्य में भी नया अलगाव आया। उनकी जीवन दृष्टि और रचना दृष्टि भी इस ओर लगी।

जब प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त हुआ तो प्रेमचंद की जीवन दृष्टि साफ हुई। किसानों के प्रति आरंभ से ही उनके मन में सहानुभूति और जिज्ञासा का भाव था। प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन का 1918 से 1930 तक का दौर रूसी क्रांति के प्रति तरफदारी, किसानों-मजदूरों के समर्थक और कांग्रेस के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि का दौर था। कुल मिलाकर प्रेमचंद और किसान अब करीब आ चुके थे। ऐसे साहित्यिक और राजनैतिक माहौल में उन्होंने 1918 में 'प्रेमाश्रम' लिखा। इस उपन्यास में किसानों का दूसरे वर्ग के लोगों के साथ संबंध का वर्णन किया है। 'प्रेमाश्रम' में किसान का पहला शोषक चपरासी गिरधर महाराज है। अधिकारियों के जब दौरे होते हैं, तब यही चपरासी गाँव के एकमात्र भाग्य विधाता बन जाते हैं। किसी की लकड़ियां उठा लाए, किसी का चारा, किसी का सामान उठा लाए। प्रेमचंद ने अवसर पाते ही चपरासियों के अत्याचारों का वर्णन किया है। किसानों का शोषण करने वाला दूसरा वर्ग जमींदार है। इस उपन्यास में लखनपुर का जमींदार गौस खाँ गाँव के बड़े किसानों को मिलाकर अन्य किसानों पर अत्याचार करता है। जमींदार के बाद किसानों का शोषण ब्रिटिश नौकरशाही करती है। "भारत के किसानों का शोषण अकेले न तो जमींदार करता था और न सरकार करती थी। प्रेमचंद ने अनुभव किया कि इस देश के मुट्ठी भर अंग्रेज शासकों ने शोषकों की एक विशाल फौज खड़ी कर ली है और उसके स्वार्थ की तलवार किसानों की गर्दन पर सीधे पड़ी हुई है।" गाँव के भोले भाले किसान दीन-दुनिया की खबर नहीं रखते, कानून का अधिकार नहीं जानते। उनके अपने बीच एकता नहीं है, वह संघ बल नहीं है कि अन्याय का प्रतिकार कर सकें। इसीलिए वह बड़ी आसानी से जमींदार और सरकार के मुलाजिमों द्वारा बिछाए हुए जाल में फँस जाते हैं। प्रेमचंद ने किसानों को इन परेशानियों से निकालने का एक तरीका बताया है, मानवतावादी लोग इकट्ठे हों और वह किसानों के बीच मिशनरी कार्य करें।

यह संघर्ष गाँव की चिरपुरातन सहकारी सभ्यता और आगत औद्योगीकरण के बीच है। "रंगभूमि में भारतीय पूँजीवाद के शैशव का चित्रण है। इसमें पूँजीवाद अभी घुटनों के बल पर चल रहा है।" उपन्यास के नायक सूरदास के पास दस बीघे ज़मीन थी, जिस पर मुहल्ले

की गाय भैंसे चरती थीं, इस जमीन से उसे कोई आमदनी न थी। वह इसे मात्र इसलिए बचाए रखना चाहता है क्योंकि वह बाप-दादों की निशानी है। मि.जानसेवक उसकी जमीन छीननी चाहते हैं, भले ही उनके शहर में बड़े-बड़े बंगले हैं । परन्तु जानसेवक उसकी जमीन लेना चाहते हैं, जो सामन्ती सम्पत्ति का प्रतीक बन गई है। जानसेवक और सूरदास का यह संघर्ष वैयक्तिक नहीं रह जाता बल्कि वह पूंजीवाद और सामंतवाद का संघर्ष बन जाता है।

प्रेमचंद के 'कर्मभूमि' नामक उपन्यास की रचना भारतीय स्वातंत्रता आंदोलन के उस दौर के समय हुई, जब राष्ट्र ने स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए प्राणों की बाज़ी लगा दी थी। 'कर्मभूमि' में किसानों के प्रश्न को लेकर भी एक आन्दोलन चला है। "कर्मभूमि में दो आन्दोलन हैं। एक शहर में, एक गाँव में। शहर का आन्दोलन म्यूनिसिपल के खिलाफ है, गाँव का जमींदार के खिलाफ।" घोर आर्थिक संकट में पड़े हुए किसान अपने जमींदार महंत के लगान की रकम दे पाने के योग्य नहीं रह गए हैं। कर्मभूमि के महंत आसामियों ने जो लगानबंदी का आन्दोलन चलाया है, उसके साथ भी सरकार का प्रत्यक्ष संबंध तो नहीं है किन्तु उसमें सरकार कहीं न कहीं आ ही जाती है। किसानों की मांग है कि भयानक मंदी को देखते हुए लगान में छूट दी जाए। महंत ने अमरकान्त को बताया कि सरकार उनको जितनी मालगुजारी छोड़ देगी, वह भी किसानों को उतनी ही लगान छोड़ देगा। 'कर्मभूमि' उपन्यास युग का यथार्थ चित्रण और युग के यथार्थ पर गहरा व्यंग्य है।

किसानों का आर्थिक-सामाजिक शोषण

"गोदान' में होरी-धनिया "मोटा-झोटा खाकर मरजाद के साथ रहना चाहते हैं। वे एक किसान के रूप में जीवन बसर करते रहने के लिए प्रयत्नशील हैं। गाय पालने की एक छोटी-इच्छा जरूर है, परंतु नीति और धर्म के मार्ग पर चलकर इस इच्छा को पूरी करना चाहते हैं। मेहनती हैं, ईमानदार हैं – परंतु वर्तमान व्यवस्था में वे अपनी मर्यादा का पालन नहीं कर पाते किसानी और मर्यादा में से उन्हें किसी एक को तिलांजलि देनी है। होरी किसान बने रहना चाहता है, परंतु रह नहीं पाता।

प्रेमचंद ने होरी की इस कामना के विरोधियों के अंतःसंबंध और उनके हथकण्डों का पर्दाफाश किया है। प्रेमचंद प्रथमतः ज़मींदार विरोधी थे। इस तंत्र की पद्धति का उद्घाटन करते हुए साम्राज्यवाद विरोधी हो गए। "गोदान" में अंग्रेज़ी राज का पोषण राज्य-कर्मचारियों के द्वारा होता है। होरी के गाँव में पटेश्वरी सरकारी नौकर है। वह एक बार धमकाते हुए कहता है, "मैं

ज़मींदार या महाजन का नौकर नहीं हूँ, सरकार बहादुर का नौकर हूँ, जिसका दुनिया भर में राज है और जो तुम्हारे महाजन और ज़मींदार दोनों का मालिक है।'

प्रेमचंद ने ज़मींदारों की असलियत का बयान करते हुए शक्तिशाली ब्रिटिश राज्य के शोषण एवं आतंक की ओर इशारा किया है। राय साहब कहते हैं, "हम बिच्छू नहीं हैं कि अनायास ही सबको डंक मारते फिरें। न गरीबों का गला दबाना कोई बड़े आनंद का. काम है।" परंतु करें क्या? "अफसरों को दावतें कहाँ से दूँ, सरकारी चन्दे कहाँ से . दूँ?...आएगा तो असामियों ही के घर से। आप समझते होंगे, ज़मींदार और ताल्लुकेदार सारे संसार का सुख भोग रहे हैं। उनकी असली हालत का आपको ज्ञान नहीं; अगर वह धर्मात्मा बन कर रहे तो उनका जिन्दा रहना मुश्किल हो जाए। अफसरों को डालियाँ न. दें, तो जेलखाना हो जाए।' ("गोदान', पृ.145) एक दूसरे प्रसंग में वे कहते हैं, "वसूली सरकार के घर गई। बकाया असामियों ने दबा लिया। तब मैं कहाँ जाऊं?". ("गोदान', पृ.142) तात्पर्य यह है कि होरी का शोषण सूत्र अंग्रेजी राज तक जाता है। प्रेमचंद ने चूँकि अंग्रेज़ों की शोषण प्रक्रिया का उद्घाटन नहीं किया है, इसलिए वे आवश्यकतानुसार उस ओर इशारा करके अपनी मूल कथा-भूमि में लौट आते हैं।

निष्कर्ष

प्रेमचंद किसान को किसान के रूप में देखना चाहते हैं। इसी वर्ग में रहते हुए इनकी दशा सुधारने की वकालत करते हैं। होरी इसी गरीब छोटी जोत वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है। ऐसा किसान जिसके पास पाँच-छह बीघा जमीन है, बकाया लगान का बोझ है, न . उतरने वाला ऋण है, अनेक सामाजिक-धार्मिक मान्यताओं से जकड़ा हुआ है, असंगठित है, असहाय है और बस खेत-मज़दूर बनने ही वाला है। प्रेमचंद इसके पक्षधर हैं। अनेक कष्टों के बावजूद होरी की किसान बने रहने की इस जिद्दनुमा आकांक्षा को प्रेमचंद ने बहुत आदर से देखा है। यह एक किसान के अस्तित्व रक्षा का सवाल है। इस आकांक्षा के लिए होरी छोटी-मोटी बेईमानी भी करता है, यहाँ तक कि अंत में अपनी बेटी बेचने पर मजबूर हो जाता है। तब भी, वह लेखकीय

संदर्भ

1. डॉ. रामबक्ष, 'प्रेमचन्द और भारतीय किसान', वाणी प्रकाशन, दिल्ली(1982), पृ.34
2. डॉ. सरोज प्रसाद, 'प्रेमचन्द के उपन्यासों में समसामयिक परिस्थितियों का प्रतिफलन', रचना प्रकाशन, इलाहाबाद(1972), पृ.232

3. सं. डॉ. इन्द्रनाथ मदान, 'प्रेमचन्दः चिंतन और कला' सरस्वती प्रेस, बनारस(प्रकाशन वर्ष अनोपलब्ध), पृ.53

4. राजेश्वर गुरू, 'प्रेमचन्दः एक अध्ययन', एस. चन्द एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली(1965), पृ.221

5. सं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, 'प्रेमचन्द', कीर्ति प्रकाशन, गोरखपुर(1980), पृ. 165

6. वही, 166

7. वही, 149

8. वही, 191

9. देवेन्द्र दीपक (संप.) त्रिभूवननाथ शुक्ल (संप.), साक्षात्कार, (मुंशी प्रेमचंद-पूस की रात), साहित्य अकादमी, भोपाल, (अंक 427, जुलाई 2015), , पृ. 29